Code. No: 25

एक नया समझ 393

आसमान लाल रंग में
भीग है, जैसे किसी
चित्रकार अपने कानवास
पर छाया लगाया हो।

सूरज अलविदा कहकर
गहरी सागर में डूब जाता, ~~एक दम~~
~~धीरे~~ एक दम धीरे, जैसे उसे
जाने का मन न हो।

चिड़ियाँ अपने नीड़ों के
तलाश में, एक साथ
उड़ते हैं, जैसे उनका कोई
इंतज़ार में हैं वहाँ।

कुछ बच्चे अपने
सौदा बेजने केलिए, हर
आदमी के पास, जैसे उसका
खफ़ा सब चेहरे में लिखा है।

~~एक दफ़ा सोच, गया वहाँ~~
तेज़ हवा उसके बालों में
छूकर, उसकी हाथों को
आराम नहीं देता, जैसे
कोई बच्चा अपनी माँ को सिताया करता।

एक दफ़ा सोच, गया वहाँ,
दूर, सामने से लहरें आकर,
कहाँ गायब होता? आता क्यों वह
यहाँ तक, बिना कोई मंज़िल?

THE DISTRICT EDUCATI

सोच बदलो। है बड़ी
मंज़िल उसकी, जो उसे
कुछ फैदा न हो,
लेकिन फैदा कोई और को।

अगर सागर निश्चल
होती, तो कैसे पाता,
जोकि अपने मकसद
कैसे जुड़ाया होगा दुनियाँ।

अगर सागर निश्चल
होती, तो ~~कैसे~~ भरा होता
मन और नयन, जब
कुछ प्यास आए।

अगर सागर निश्चल
होती, तो क्या तुम्हें
मन आ जाता कुछ
अच्छे परिवर्तन को?

तो यही है राह,
तकदीर को कुछ
खास बनाने को, है बहुत
समझने लायक इस प्रकृती की भाषा।

एक नई शुरुआत है,
जहाँ हार हुआ, वहीं से,
आगे बढ़ने का ऊर्जा मिलता,
कुछ नई असर लगाने।

सम्मान खोकर खड़ी है,
सबके सामने, जिसे भरोसा रखा,
वह छोड़ के चला गया।
उससे बदला ऐसा ही हो जाए।

शायद मुझे कुछ न
मिले, लेकिन बच जाता
औरों के जीवन, और
भर जाती मेरी ज़िंदगी।

है यही, उस बच्चे
जो, भेजता आँसू
जो, अपने से भी बड़ा
दुःख का भार सर पैर लेता।

चल, जा उसकी ज़िंदगी में,
उसकी कहानी सुनकर,
उसका हाथों अपने हाथों मे लेकर,
लेजा उसे बादलों तक।

जो उसे न मिला,
वह तुम बना सकती हो,
सिर्फ दो अक्षर - "मौका"।
उसे कलम और किताब दिखाकर।

है तुम्हारे पास विद्या की,
शक्ति, जिसे तुम ला
सकती, उसे बाहर,
दासता से।

वहीं खडे करते ही,
पास आया वह एक बर्तन लेकर,
काला चेहरा है, लेकिन
मुसकान सफेद दिख रहा है।

मन में कुछ लहरें
उमडने लगे, वह सामने
आकर पूछा - "दीदी एक
पाकट चना लो न, बहुत अच्छा है।"

…E OF THE DISTR…

~~उसकी मन के का प्रकाश~~
उसकी मन की रोशनी
चेहरे पर आच्छादित हुई, एक बार
और - "दीदी, एक पाकेट... कल का
~~रोटी~~ दाल खरीदना है। सिर्फ दस रुपए हैं।"

वह बच्चा का हाथ पकड़कर,
पलटकर चली;- "कल से तेरा
सेहत मेरा ~~जिम्मेदारी~~ है, ~~~~
तेरा साथियों का भी।"

उस मोड़ पर कुछ
ऐसा असर लगा था,
जो आगे बढ़ाया था, उसे
आगे ही बढ़ाया।

मेहरबानी सिर्फ धन का
योगदान नहीं, ~~~~ तकलीफ
उठाने को, उससे उठाकर
किशोर बनाके देना भी है।

ऐसे तोहफे कभी
कीमती होता नहीं,
सारे जीवन पे
अनमोल रहता है॥